साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

क्या बासी धर्म आज की ताजा समस्याओं का समाधान दे सकता है?

लेखक: डॉ.पद्मश्री गुणवन्तभाई शाह
अनुयादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

समाज को स्थापित बासी परम्पराओं में अधिक रुचि होती है। समाज गतानुगतिक(भेड़चाल चलता है) है। ऐसी जड़ता के विरुद्ध जो भी समझदार आदमी उच्च प्रकार का सत्य लेकर आता है,उसे कीमत चुकानी पड़ती है।

पर्याप्त विचार कर लेने के बाद एक बात हाथ लगी है। जैसे जैसे धर्म आगे बढ़ता है,वैसे वैसे उसमें रहस्यवाद (मिस्टीसिज़्म) का उदय होता है। यह रहस्यवाद कालक्रमानुसार अधिकाधिक आकर्षक होता जाता है। वैदिक धर्म में कालक्रम से उपनिषदों का आविर्भाव हुआ और वेद से भी ज्यादा आकर्षण बढ़ता रहा। इसी प्रकार, इस्लाम में सूफी पंथ का उद्भव हुआ और सूफी विचारधारा के प्रति आकर्षण बढ़ता रहा। इसी प्रकार, बौद्ध धर्म में `झेन' विचारधारा आज भी दुनिया में होती जा रही है।यहूदी धर्म में जो रहस्यवाद पैदा हुआ उसे kabakllah(काबल्लाह) कहा जाता है। उस रहस्यवाद का सारांश इस प्रकार है:-

भगवान ने अपने स्वरूप जैसा मनुष्य पैदा किया,परंतु उस मनुष्य को अमरत्व प्रदान नहीं किया। अमरत्व नहीं दिया तो उसका मुआवजा चुकाने के लिए भगवान ने एक युक्ति की। जिसके परिणामस्वरूप भगवान ने समझदारी और बुद्धिमानीवाले कुछ खास मनुष्य पैदा किए।

ऐसे समझदार और अक़्लमंद लोगों की समाज में क्या दुर्दशा हुई? इस प्रश्न का जवाब विख्यात ग्रीक इतिहासकार प्लुटार्क ने दिया। प्लुटार्क ने कहा:- ``जो मनुष्य उच्च कोटि का सत्य प्राप्त करता है,उसे समाज में जो गंभीर मूल्य प्रस्थापित हो चुके हों,उनका स्वीकार करने में बड़ी परेशानी होती है।

समाज को स्थापित हुई बासी परम्पराओं में अधिक रुचि होती है।समाज का एक लक्षण यह होता है, कि समाज गतानुगतिक(भेड़चाल चलता है) होता है ऐसी जड़ता के विरुद्ध जो भी समझदार आदमी उच्च प्रकार का सत्य लेकर आता है,उसे कीमत चुकानी पड़ती है।बुद्ध और महावीर को गतानुगतिक परंपरा के खिलाफ लड़ने में कोई कम कष्ट नहीं हुआ।इसी प्रकार इसु को परंपरागत मूल्यों का प्रतिपादन करनेवाले धर्म के विरुद्ध लड़ने में शूली ऊपर चढ़ना पड़ा था।इसु से पूर्व सोक्रेटिस को जहर(हेमलोक) पीना पड़ा था। उसी प्रकार, महात्मा गांधी को गोली खानी पड़ी थी।जो समाज के औसत समझ से कुछ थोडे ऊंचे सत्य का उद्गार करे,उसका अन्त करुण होता है।

इस्वी की नौवीं सदी में इरान के उत्तर-पूर्व में बसे हुए बास्ताम नामक गाँव में बयाझिद का जन्म हुआ था। इस्लामी आलम में सूफी पंथ में विकसित रहस्यवाद में शिखरस्थ रहस्यवादी के रूप में बयाझिद का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बयाझिद के जीवन में फकीरी की रोशनी प्रकट होती हुई दिखाई देती है। वह एक ऐसा फकीर था,जो कटु सत्य साहसपूर्वक तथा खुलकर निर्भीकता के साथ कह सकता था। ऐसा भी कहा जाता है,कि इस्लाम में `फना' की जो संकल्पना है,उस संकल्पना का जनक भी बयाझिद था। उसके जीवन से जुड़ी एक कथा यहाँ प्रस्तुत है:-

गर्मी के कारण बसरा के लोग भूने जा रहे थे। बारिश हुई नहीं थी। तप्त रेती सबको परेशान कर रही थी। बसरा नगर के सारे लोग नगर के सिवान पर बैठे हुए थे। सभी मुसलमानों ने आकाश की ओर नजर करके अल्लाह की बंदगी करते हुए कहा: `या अल्लाह! रहम कर,रहम कर। हम गरमी में मारे जा रहे हैं। हम पर रहम करके थोड़ी बारिश भेज दे।' प्रार्थना के जवाब में बरसात की एक भी बूंद नहीं बरसी। सारे नगरजन निराश हो गए। उस समय उस सिवान पर से एक सामान्य सा दिखाई

देनेवाला एक मुसलमान गुजर रहा था। उसने आकाश की ओर देखा। बसरा के लोगों की पीड़ा देखकर उसने अल्लाह से प्रार्थना की। `या अल्लाह! बसरा के लोगों पर रहम कर।' जवाब में तत्काल कुछ बारिश हुई। लोगों के टोले में से एक मुसलमान उस अनजान आदमी को देख रहा था,जिसकी प्रार्थना सार्थक हुई थी। उसने उस मुसलमान के पास जाकर पूछा,`अल्लाहमियाँ ने आपकी प्रार्थना सुनी और बारिश हुई। आपने अल्लाह से क्या कहा? जवाब में उस मुसलमान ने कहा,`मैंने अल्लाह से कहा, या अल्लाह! बसरा के लोगों पर रहम कर क्योंकि मेरी इन आँखों को भी देख। इन आँखों ने फकीर बयाझिद को देखा है।' टोले में रहे एक मुसलमान ने अनजान आदमी से पूछा,`यह बयाझिद कौन है?' जवाब में अनजान मुसलमान ने कहा: `बयाझिद तो बादशाहों का बादशाह था। वह अल्लाह से बहुत प्यार करता था और अल्लाह भी उसे बहुत प्यार करते थे। बयाझिद रेगिस्तान में जहां जहां भी जाता था वहाँ गुलाबों का बाग खिल उठता था। वह जहां भी ठहरता था वहाँ पानी के झरने बहने लगते थे और ठंडी हवा दिल को शुकुन देती थी। सूफी फकीरों में आज भी बयाझिद का स्मरण आदरपूर्वक होता रहता है और ओशो रजनीश बारंबार बयाझिद की प्रशंसा करते रहते थे।' वर्तमान सूफी आलम में विद्वान इद्रिश शाह का नाम मशहूर है। इद्रिश शाह की दो पुस्तकें मैंने खरीदकर पढ़ी हैं।

१.धी केरेवान ड्रीम्स
२. विजडम ऑफ धी इडियट्स।

सूफी संत जलालुद्दीन रूमी की दरगाह पर भी गया हूँ। वह दरगाह टर्की देश के कोनिया नामक नगर में है। जलालुददीन रूमी एक ऐसे संत हुए,जिन्होंने इस्लाम की शोभावृद्धि की है। उनके द्वारा कही गई एक कथा मैं आपको सुनाता हूँ,सुनिए:

रेगिस्तान की गर्मी में एक मुसलमान घबराया हुआ दूरस्थ एक मस्जिद की ओर दौड़ रहा था। नमाज का वक्त हो रहा था। अत: वह मुसलमान नमाज अदा करना चूक नहीं जाए,इसलिए त्वरा से दौड़ रहा था। जैसे ही वह दौड़ता हुआ मस्जिद के प्रवेशद्वार पर पहुंचा तब वहाँ खड़े द्वारपाल ने कहा,`नमाज तो अदा हो गई।' द्वारपाल का यह वाक्य सुनकर पसीने से नहा रहा वह मुसलमान बहुत निराश हो

गया। उसके सारे शरीर पर पसीना ही पसीना था और उस पर रेगिस्तान की रेती चिपक गई थी। गहरा निश्वास डालकर उस मुसलमान ने कहा,` या अल्लाह! मैं तेरी बंदगी चूक गया!' ऐसा भक्तिभाव देखकर द्वारपाल ने उस मुसलमान से कहा; यदि तुम्हें स्वीकार्य हो तो,मैं तुम्हें तुम्हारे एक निश्वास के बदले में अपनी एक हजार नमाज का पुण्य देने के लिए तैयार हूँ।' उस मुसलमान ने यह बात स्वीकार कर ली। नमाज चुके हुए मुसलमान को बड़ा संतोष अनुभव हुआ। रात हुई और रेगिस्तान ठंडा हुआ तब उस भक्त को नींद लग गई। उसके सपने में पयगम्बर स्वयं आए और कहा: `तुम सच्चे मुसलमान हो परंतु तुमने घाटे का सौदा किया है।' तुम्हारा एक निश्वास अमूल्य है और हजारों नमाजों के पुण्य से ज्यादा पुण्यशाली है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।' जवाब में उस भक्त मुसलमान ने कहा: `घाटे का सौदा कैसे? मैंने भूल की तब तो सपने में मुझे आपके दर्शन हुए। हे रसूले खुदा! मेरा सलाम कुबूल कीजिये।' मुझे यह बात जलालुद्दीन रूमी की दरगाह पर आए एक जर्मन ने टर्की की यात्रा के दौरान सुनाई थी।

भगवान हैं या नहीं,यह मुद्दा भले ही चर्चित होता रहे। हम भगवान को मानते हैं या नहीं यह मूल प्रश्न नहीं है। मूल प्रश्न तो यह है,कि हम अपने आप को मानते हैं या नहीं? गौतम बुद्ध भी निरिश्वरवादी थे और भगवान पर आधार रखने की वृत्ति के समर्थक नहीं थे। सद्गत भोगीलाल गांधी ने एक ऐसा भजन लिखा,जिसमें नास्तिकता का सौन्दर्य हूबहू प्रकट हुआ है। उस भजन की ध्रुवपंक्ति है, `तू तारा दिलनो दीवो था ने!(तुम खुद के दीपक बनो!) भगवान बुद्ध ने कहा: `अप्प दीपो भव।' मनुष्य नास्तिक हो या आस्तिक,परंतु वह यदि अपने दिल को वफादार रहने की बात को समझ ले तो ढेर सारी अंधश्रद्धाओं से बच सकता है। यदि ऐसा हुआ तो आसाराम सफल नहीं होगा। साधुता जैसी सुंदर चीज दुनिया में और कोई नहीं है और असाधुता जैसी गंदी चीज और कोई नहीं है। हमें साधु होना नहीं है,हमें असाधु भी नहीं होना है। हमें तो केवल इंसान होना है। यदि मृत्यु के बाद भगवान सामने हों तो वह हमें ऐसा नहीं पूछेंगे कि `तुम महात्मा गांधी क्यों नहीं हुए? भगवान इतना ही पूछेंगे कि:`तुम तुम क्यों नहीं हुए?'

समझदारी:
भगवान हैं,
ऐसा हम नहीं मानते
पर हमें लगता है, कि
मूल प्रश्न उसके अस्तित्व का नहीं है।
सच्ची जरूरत तो है
मनुष्य पुन:
खुद को खोजे-यह है
सही जरूरत तो है
यह समझने की कि
मनुष्य को अपने आप से
भगवान है,उसका सच्चा प्रमाण भी
बचा नहीं सकेगा।
ज्या पोल सार्त्र
(पेरिस में दिये गए प्रवचन में से)

------००-------

संपर्क: २-`शील-प्रिय'; विमलनगर सोसायटी,नवाबजार, करजण। जिला: वडोदरा.गुजरात.पिनकोड: ३९१२४०.
मोबाइल: ९९२४५६७५१२. E.Mail id: navkar1947@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें